

219

H(19)

(P)

MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY

भारत सरकार
Government of India

नई दिल्ली
New Delhi

1311
1924

आह्वानांक Call No. _____

अवाप्ति सं० Acc. No. _____

219

891.431

R 183Aa

वन्देमातरम्



RECEIVED

10 DEC. 1931

DEPARTMENT

आज़ादी का बिगुल

जिसमें

चुने हुए जोशीले आदर्श-पूर्ण भजन एक बार पढ़ने
से ही तबियत फड़क उठनेवाली कविताओं
का संग्रह तथा महात्माजी की ११ शर्तें

संग्रहकर्ता व प्रकाशक

क्षमाचन्द्र रस्तोगी,

मुहल्ला साहुकारा,

बदायूँ

प्रथम बार ४०००]

[मूल्य ८]



महात्मा गांधी की ११ शर्तें

- महात्मा गांधी की ग्यारह शर्तें अमल में लाकर दिखाना होगा।
- प्रजा के आगे तुम्हें भी साहब ! सर अपना अब तो भुकाना होगा ॥
- १ नशीली चीजें शराब, गाँजा, अफीम आदिक जो बुद्धि हरतीं ।
मिटा के इनकी खरीद-बिक्री, दुकानें सारी उठाना होगा ॥
- २ हमारे सिक्के की दर को साहब ! घटा बढ़ा करके लूटते हो ।
अब एक शिलिंग चार पेनी, ही भाव उसका बनाना होगा ॥
- ३ लगान आधा करो जमीं का, किसान जिससे जरा सुखी हों ।
महकमा इसका हमारी कौंसिल के ताबे तुमको रखाना होगा ॥
- ४ फिजूल-खर्ची, बिला ज़रूरत, जो फौज पर हो रही हमारी ।
अधिक नहीं गर तो आधा उसको, ज़रूर साहब घटाना होगा ॥
- ५ बड़े-बड़े भारी-भारी वेतन, डकारते हैं जो आला अफसर ।
उसे मुआफिक लगान आधा या उससे भी कम कराना होगा ॥
- ६ स्वदेशी कपड़े करे तरक्की, विदेशी कपड़े न आने पावें ।
विदेशी कपड़ों पै और महसूल, ज्यादा तुमको लगाना होगा ॥
- ७ समुद्र तट का जहाज़ी बाणिज, न हाथ में हो विदेशियों के ।
उसे हमारे महाजनों के, अधीन रखकर चलाना होगा ॥
- ८ जिन्हें क़तल, या क़तल-इरादा, सज़ा मिली हो उन्हें न छोड़ें ।
बक्राया कैदी पोलिटिकल सब, तुरन्त साहब ! छुड़ाना होगा ॥
- ९ उठा लिये जायँ राजनैतिक, जो मामले चल रहे मुलक पर ।
जो इकसौचौबिसदफा अलिफ है, उसे तो बिलकुल मिटाना होगा ॥
- १० अठारह का ऐक्ट रेगुलेशन तथा दफा ऐसी सब उठाकर ।
हमारे भाई जो निर्वसित हैं, उन्हें वतन में बुलाना होगा ॥
- ११ मुहकमा खुफिया-पुलिस उठा दो या करदो उसको प्रजा के ताबे ।
हमें भी बंदूक और पिस्तौल बराय हिफाजत दिलाना होगा ॥

आज़ादी का विगुल

६—गज़ल

छीन सकती है नहीं सरकार वन्देमातरम् ।
हम ग़रीबों के गले का हार वन्देमातरम् ॥
सर चढ़ों के सर में चकर उस समय आता ज़रूर ।
कान में पहुँची जहाँ भनकार वन्देमातरम् ॥
जेल में चक्की घसीटे भूख से हो मर रहा ।
उस समय भी बक रहा बेज़ार वन्देमातरम् ॥
मौत के मुँह में खड़ा है कह रहा जल्लाद से ।
भोंक दे सीने में वह तलवार वन्देमातरम् ॥
डाक्टरों ने नब्ज़ देखी सर हिलाकर कह दिया ।
हो गया इसको तो यह आज़ार वन्देमातरम् ॥
ईद होली और दशहरा शुबरात से भी सौ गुना ।
है हमारा लाडला त्योहार वन्देमातरम् ॥
ज़ालिमों का जुल्म भी काफ़ूर सा-उड़ जायगा ।
फ़सला होमा सरे दरबार वन्देमातरम् ॥

२—गज़ल

बूढ़े भी ज़रा देखें तदबीर जवाहर की ।
 चमकी है जवानी में तक़दीर जवाहर की ॥
 बेचैन हुए क्या-क्या बेदर्द भी सुन-सुन कर ।
 किस दर्द में डूबी है तक़दीर जवाहर की ॥
 दारा की भी दाराई कुरबान न हो क्योंकर ।
 इस वक्त सिकन्दर है तक़दीर जवाहर की ॥
 चुभ-चुभ के कलेजे में तड़पाने लगी दिल को ।
 नशतर से नहीं कुछ कम तक़रीर जवाहर की ॥
 कोहराम है दुनिया में हलचल है ज़माने में ।
 सौ रंग दिखायेगी तदबीर जवाहर की ॥
 रक्खे हुए है सर पर वो ताज सदारत का ।
 हो इससे ज्यादा क्या तौकीर जवाहर की ॥
 इनाम है अय बिस्मिल ये मुल्क की खिदमत का ।
 हर दिल में उतर आई तसवीर जवाहर की ॥

३—गज़ल

मत पूछो क्या दर्शाया है इन गाँधी टोपी वालों ने ।
 भारत में धूम मचाया है इन गाँधी टोपी वालों ने ॥
 अर्जुन और द्रोण युधिष्ठिर के वंशजवाले जो सोते थे ।
 निद्रा से उन्हें जगाया है इन गाँधी टोपी वालों ने ॥

कर सत्य अहिंसा व्रत पालन अपने भाई के हाथों से ।
 डंडों से सर तुड़वाया है इन गाँधी टोपी वालों ने ॥
 मुद्दत से गुलामी में फँसकर जो अब तक भूखों मरते थे ।
 उनको इक राह दिखाया है इन गाँधी टोपी वालों ने ॥
 धरना दे विदेशी वस्त्रों पर पुलिसों के भी डंडे खाकर ।
 फिर भी नहीं हाथ उठाया है इन गाँधी टोपी वालों ने ॥
 जल्लादों के जीवन को अब कर देगा सत्यानाश यही ।
 जो अपना खून बहाया है इन गाँधी टोपी वालों ने ॥
 उन भारत वीर प्रताप शिवा और पृथ्वीराज बहादुर का ।
 हम सबको पाठ पढ़ाया है इन गाँधी टोपी वालों ने ॥
 भाले बंदूक तमंचों से जब-जब मारा है ज़ालिम ने ।
 तब सीना खोल दिखाया है इन गाँधी टोपी वालों ने ॥
 लंकाशायर भी चीख उठा कुहराम मचा है लंदन में ।
 एक ऐसा चक्र चलाया है इन गाँधी टोपी वालों ने ॥
 रोते हैं विदेशी व्यापारी सर धुन-धुन कर यारो तब से ।
 जब से खदर पहनाया है इन गाँधी टोपी वालों ने ॥
 वो लाखसितम करलें शायक पर पथ से न हम विचलित होंगे ।
 सर अपना आज भुकाया है इन गाँधी टोपी वालों ने ॥

४—गज़ल

इलाही तुम भी खयाल रखना गवाह तुमको बना रहे हैं ।
 हम हिन्दुवालों को पाके दुर्बल वो हर तरह से सता रहे हैं ॥

सुना है फ़रियाद पर वो मेरे ग़ज़ब के तेवर चढ़ा रहे हैं ।
 तो सर कटाने की आर्जू में हम आज मक़तल में जा रहे हैं ॥
 अजब है उत्साह सबके दिल में कि लोग जेलों में जा रहे हैं ।
 जो कल थे मख़मल पै सोनेवाले वो आज कंबल बिछा रहे हैं ॥
 हम हिंदू माता का ऋण चुकाने को खून अपना बहा रहे हैं ।
 मगर उन्हें क्या जवाब होगा जो हम पै गोली चला रहे हैं ॥
 हम हिन्दू माँ के हैं ऐसे बच्चे जो जान अपनी लड़ा रहे हैं ।
 और एक भारत सपूत वो हैं जो पेश डंडों से आ रहे हैं ॥
 जो मेरे महफ़िल के बामुकाबिल वो गन मशीनें लगा रहे हैं ।
 तो हम भी आहों की ताक़तों से उन्हीं की हस्ती मिटा रहे हैं ॥
 फ़लक के नीचे से हट वो जायें अभी से उनको चेता रहे हैं ।
 हम अपनी आहों से इस समय आस्माँ को भी डगमगा रहे हैं ॥
 जो मिल के तैंतिस करोड़ भारत में आहो गिरियाँ मचा रहे हैं ।
 ये रोजे महशर को सोते फ़ितनों को आज ही से जगा रहे हैं ॥
 शमा की सूरत में दिल जलाकर वो लेके गुलगीर आ रहे हैं ।
 जो हिंदू के हैं चिरागे रोशन बिचारे सर को कटा रहे हैं ॥
 वो जोश खाकर दमन को अपने जो चक्र अज़हद ला रहे हैं ।
 तो अहलेशायक़ स्वतंत्रता के खुद अपने सर को भुका रहे हैं ॥

५—ग़ज़ल

बंदी बन शक्ति सिया जिसमें दल निश्चर भक्त उबारी है ।
 चलिये- लिये उस तीरथ को जहाँ भारत का हितकारी है ॥

सुख सम्पति भूषण भवन तजे परमारथ का अधिकारी है ।
 व्रत एक अहिंसा है जिसका साधन का सत्य पुजारी है ॥
 चरखा एक अस्त्र अजय जिसका मदहारी खदरधारी है ।
 दल का छवि भारतकारवि है जीवन धन सिद्ध सुचारी है ॥
 गुण बारिधि नीति विशारद है जहाँ अद्भुत धीर भिखारी है ।
 जिसके पद बंदित लोक नये उस बंदी की बलिहारी है ॥

६—गजल

हो बन्दी वे पग जाय गहो जिन पै अब आश हमारी है ।
 अति चातुर चरखा चक्र गहे कतली कर खदरधारी है ॥
 चलिये-चलिये उस तीरथ में जन्मा जहाँ कृष्ण मुरारी है ।
 व्रत एक अहिंसा है जिसका सर्वोपरि शांत पुजारी है ॥
 साधन निस्वार्थ सदा जिसका गुर एक त्रिया व्रतधारी है ।
 मद है नहिं नीति विशारद है इस भारतका हितकारी है ॥

७—गजल

वीर बालिकाएँ

हम देख चुकी हैं सब कुछ पर अब करके कुछ दिखला देंगी ।
 निज धर्म कर्म पर दृढ़ होकर कुछ दुनिया को सिखला देंगी ॥
 है क्या कर्तव्य हमारा अब पहचान लिया हमने उसको ।
 अरमान यही अब दिल में है लंदन का तख्त हिला देंगी ॥
 समझो न हमें कन्यायें हैं हम दुष्ट नाशिनी दुर्गा हैं ।
 कर सिंहनाद आज़ादी का दुष्टों का दिल दहला देंगी ॥

राष्ट्रीय ध्वजा लेकर कर में गावेंगी राष्ट्र गीत प्यारे ।
 दौड़ा कर बिजली भारत में मुर्दे भी तुरत जिला देंगी ॥
 बेड़ियाँ गुलामी काटेंगी आज़ाद करेंगी भारत को ।
 उजड़े उपवन में भारत के अब प्रेम प्रसून खिला देंगी ॥
 कंपित होगी धरती ही क्यों हों आसमान हिल जावेगा ।
 कविरत्न वज्र की भाँति तड़प रिपुदल का दिल दहला देंगी ॥

८—गज़ल

अधीन रह कर बुरा है जीना ।
 है मरना अच्छा स्वतंत्र होकर ॥
 सुधा को तजकर गरल का प्याला ।
 है भरना अच्छा स्वतंत्र होकर ॥
 पड़ी हों हाथों में हथकड़ी गर ।
 तो स्वर्ग का सुख न चाहिये फिर ॥
 नरक के दुःख में निवास निश दिन ।
 है करना अच्छा स्वतन्त्र होकर ॥
 गुलाम रहकर मिले जो घर में ।
 सुस्वाद भोजन तो तुच्छ है वह ॥
 उपवास करके अकेले वन में ।
 विचरना अच्छा स्वतन्त्र होकर ॥
 जो दासता में मिले उपाधी ।
 या मान पदवी तो छोड़ दीजे ॥

घृणा व अपमान के गढ़े में ।

उतरना अच्छा स्वतन्त्र होकर ॥

गुलाम रह कर विदेशी मलमल ।

अगर पहनने को मिल रही हों ॥

तो लाख दर्जे है उससे खदर ।

पहनना अच्छा स्वतन्त्र होकर ॥

स्वतन्त्रता के लिये मरेंगे ।

स्वतन्त्रता ध्येय है हमारा ॥

दिनेश फाँसी पै सर खुशी से ।

है धरना अच्छा स्वतन्त्र होकर ॥

— ९— गज़ल हसरते दिल

देखना है किस क़दर दम खंजरे कातिल में है ।

अब भी ये अर्मान यह हसरत दिले बिस्मिल में है ॥

ग़ैर के आगे न पूछो इसमें है एक ख़ास राज़ ।

फिर बता देंगे तुम्हें जो कुछ हमारे दिल में है ॥

खींच कर लाई है सबको क़त्ल होने की उम्मीद ।

आशिकों का आज जमघट कूचये कातिल में है ॥

फिरते हो क्यों हाथ में चारों तरफ़ खंजर लिये ।

आज है यह क्या इरादा आज ये क्या दिल में है ॥

एक से करता नहीं क्यों दूसरा कुछ बातचीत ।

देखता हूँ मैं जिसे वह चुप तेरी महफ़िल में है ॥

उस पर आफ़त आएगी एक रोज़ मर ही जायगा ।

बह तो दुनिया में नहीं जो कूचये कातिल में है ॥

एक जानिब है मसीहा एक जानिब है कज़ा ।

किस कशाकश में पड़ी है जान किस मुश्किल में है ॥

ज़रूम खाकर भी उसे है ज़रूम खाने की हविस ।

हौसला कितना तड़पने का तेरे बिस्मिल में है ॥

१०—गज़ल

ऐ यारो खेल समझते हैं हम जेल में आने जाने को ।

जानें हैं हमारी नज़रे वतन निकले हैं नज़र चढ़ाने को ॥

हम अपने वतन के सेवक हैं हम अपनी कौम के खादिम हैं ।

बच्चों का खेल समझते हैं हम मरने को मिट जाने को ॥

बेजुर्म ख़ता अंगरेज़ों ने शेरों को हमारे पकड़ा है ।

सौदा ये हमें भी भाया है जायेंगे जेल बसाने को ॥

ईश्वर की दयासे मिलता है बेलड़े स्वराज्य अभी तुमको ।

हिम्मत को हमारी बँधाओ तुम उठो तो हाथ बटाने को ॥

ये कैसी हुकूमत है यारो अल्लाह का कहरो ग़ज़ब इस पर ।

हम लाखों मन ग़ल्ले के मालिक मोहताज हैं दाने-दाने को ॥

कर दिया तवंगर से मुफ़लिस हर तरह से हमको लूट लिया ।

तैयार हुए हैं अब ज़ालिम मज़हब भी हमारा मिटाने को ॥

११—गज़ल

अहद कर लो धर्म पर कुर्बान जाने के लिये ।

है जवानी बस इसी दिन काम आने के लिये ॥

ऐ सपूतो भारत-माता की बचाओ आबरू ।
 जान जाने के लिए है सर कटाने के लिये ॥
 वीरता अर्जुन की मिट्टी में न मिल जाये कहीं ।
 बाण लो असहयोग का स्वराज्य पाने के लिये ॥
 मर्द होकर कैद से डरना ये कैसी मर्दमी ।
 औरतें तैयार हैं जब जेल जाने के लिये ॥
 डर को छोड़ो और बनो वालन्टियर ऐ भाइयो ।
 है जवानी चार दिन के बाद जाने के लिये ॥
 जेल भी तकदीर वालों का है हिस्सा वरना आज ।
 लाखों फिरते हैं मुक़द्दर आजमाने के लिये ॥
 अब तो नौकर पेशा फ़ौरन नौकरी को छोड़ दो ।
 दुश्मनों को अपनी मिट्टी में मिलाने के लिये ॥

१२—अभिलाषा

बतायें तुम्हें हम कि क्या चाहते हैं ।
 गुलामी से होना रिहा चाहते हैं ॥
 अगर वह न अपनी गुलामी से छोड़ें ।
 तो फिर जेल की हम सज़ा चाहते हैं ॥
 रहें फूँसो खपरैल के घर में क्यों हम ।
 उसी पक्के घर में रहा चाहते हैं ॥
 यहाँ दूसरे दिन मिले मुश्किलों से ।
 दुवक्ता वहाँ हूँसना चाहते हैं ॥

नहीं घर के खाने में अब ज़ायका है ।
 वहाँ का भी लेना मज़ा चाहते हैं ॥
 चलो भाइयो जेल को घर बनाओ ।
 उसी घर से हम मुद्दआ चाहते हैं ॥
 वह तीर्थ है वहाँ कृष्ण पैदा हुये थे ।
 उसे चल के सिजदा किया चाहते हैं ॥
 दिवाला निकल जाय जेलों का एकदम ।
 उसे इस क़दर हम भरा चाहते हैं ॥
 वो नाहक डराते हैं हमको सज़ा से ।
 खुशी से उन्हें सर दिया चाहते हैं ॥
 अजी ऐसे जीने पै सौ बार लानत ।
 बतन के लिये हम मरा चाहते हैं ॥
 सता लो हमें जितना चाहे बले हम ।
 किसी को नहीं दुख दिया चाहते हैं ॥
 है ली सारी दौलत हमारी उन्होंने ।
 ग़रीबों से अब क्या लिया चाहते हैं ॥
 स्वराज्य उनसे लेना जैसे कि देवें ।
 व लेकिन नहीं वह दिया चाहते हैं ॥
 कई बार वादे किये हम से अब तक ।
 बले उनकी अब हम वफ़ा चाहते हैं ॥

हमेशा गुलामी रहे बुज्दिलों की ।
 यही मुल्क के बेहया चाहते हैं ॥
 बनाओ नमक सारे कानून तोड़ो ।
 यह अब मुल्क के पेशवा चाहते हैं ॥
 विदेशी लिबासों की होली जला दो ।
 स्वदेशी चले जाबजा चाहते हैं ॥
 हैं नाशाद जो लाल पगड़ी पै नाज़ाँ ।
 वह सब रूसिया ही हुआ चाहते हैं ॥

१३—गज़ल

शहीदों के खूँ का असर देख लेना ।
 मिटायेंगे ज़ालिम का घर देख लेना ॥
 किसी के इशारे के हम मुन्तज़िर हैं ।
 बहा देंगे खूँ की नहर देख लेना ॥
 भुका देंगे गर्दन को हम जेरे खंजर ।
 खुशी से कटायेंगे सर देख लेना ॥
 जो खुदगर्ज गोली चलायेंगे हम पर ।
 तो कदमों में उनका ही सर देख लेना ॥
 जो नरुल हमने सींचा है खूनेजिगर से ।
 वो होगा कभी बारबर देख लेना ॥
 किनारे पै आये भँवर से यह किशती ।
 वह आयेगी एक दिन लहर देख लेना ॥

बलायें ये जायेंगी खुद सर नगीं हो ।
 नहीं होगी इनकी गुजर देख लेना ॥
 खुजन्दी हुआ हिंद आजाद अपना ।
 छपेगी ये एक दिन खबर देख लेना ॥

१४—गज़ल

दुनिया सब हैरत में आई इन गाँधी टोपी वालों से ।
 सरकार भी दिल में घबड़ाई इन०
 जो जुल्म बेगुनाह ठाते थे मजलूम सताये जाते थे ।
 आफ़त में जाँ उनकी आई इन०
 लानत है गुलामी इज्जत क्या जिल्लत ख़वारी है राहत क्या ।
 यह समझ ज़रा जाओ भाई इन०
 सैनिक बन मैदानों में आओ वीरत्व ज़रा अब दिखलाओ ।
 आजाद बनो ये सदा आई इन०
 जिन्दा दिल मदों का बाना मरने से फिर क्या दहलाना ।
 अरमाँ कुरबानी रंग लाई इन०

१५—गज़ल

नौकरी हम पर फ़िदा और हम फिदाये नौकरी ।
 मरते दम तक भी न होगी इन्तहाये नौकरी ॥
 हम गुलामों की भी कोई जिन्दगी है जिन्दगी ।
 जिनकी रग रग में भरी होवे बलाये नौकरी ॥

चमड़ियाँ उधड़े बला से जेल हो तो गम नहीं ।
 कम नहीं फाँसी के तख्ते से सजाये नौकरी ॥
 माँगते ही रह गए अल्लाह से हम यह दुआ ।
 दम निकल जाये भले पर छुट न जाये नौकरी ॥
 फिर भी किस्मत ने न मानी दे गई धोखा मुझे ।
 कर रहे आजाद बैठे घर में हाय नौकरी ॥

१६—गज़ल

जो ज़ुल्म करने को उनके मक़तल में बर्छियों की अनी रहेगी
 तो हम निशाने बनेंगे फिर भी हमारी गर्दन तनी रहेगी
 जो जुल्मबाजों की गन मशीनें चलेंगी हम बेकसों के ऊपर
 तो बाखुदा मर मिटेंगे हम सब मगर ये हसरत बनी रहेगी
 लोका के भालों पै चाहे लोकें या तोप ही दम न क्यों करा दें
 मगर ये जीते जी हम कहेंगे ठनी है जो बस ठनी रहेगी
 वो जुल्म ढालें हजारों मुझ पर पै हम अहिंसा का व्रत करेंगे
 करिश्मा भी उनका देख लेंगे कि कब तलक दुश्मनी रहेगी
 मचल के पहलू में दिल है कहता कि हम हैं शायक स्वतंत्रता के
 तुम्हारी तोपों के बा मुकाबिल हमारी ये लेखनी रहेगी

मुद्रक

श्रीप्रवासीलाल वर्मा मालवीय,

सरस्वती-प्रेस, काशी